जनवरी-मार्च 2019
ISSN: 2321-0443
UGC Journal No. 41285
ई-संस्करण सहित

ज्ञान गरिमा सिंधु

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अंक : 61

गांधी मार्ग-150

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार
Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
Government of India

अनुक्रम

आलेख	लेखक	पृष्ठ संख्या
मानव, प्रकृति एवं पर्यावरण		
1. गाँधी का पर्यावरण-विषयक विचार	डॉ. राजेंद्र कुमार पांडेय	1
2. भारत में स्वास्थ्य चुनौतियाँ एवं गांधीवादी निदान	प्रो.उशविंदर कौर पोपली, आनंद सौरभ	9
3. प्रकृति, संस्कृति और महात्मा	प्रेम प्रकाश	16
4. गाँधी-दर्शन में मानवाधिकारों की संकल्पना	डॉ. शशि शर्मा	23
5. गाँधी और पर्यावरण	उमेश कुमार	31
6. गाँधी और मानवाधिकार	डॉ. नरेश कुमार सिंह	35
आर्थिक आयाम		
1. संधारणीय विकास और गांधी –दर्शन	डॉ.शांतेष कुमार सिंह, डॉ.राकेश कुमारमीणा	41
2. गांधी का अर्थशास्त्र और नारी सशक्तिकरण	डॉ. नावेद जमाल, संजीव कुमार सिंह	50
3. खादी के पुनर्जन्म की कहानी	डॉ. पंकज कुमार सिंह	57
4. ग्राम स्वराज की सार्थकता	डॉ. राखी चौहान	65
5. ग्रामीण औद्योगीकरण एवं कम्युनिटी रेडियो	डॉ. रेणु सिंह	72
सामाजिक एवं शैक्षणिक सरोकार		
1. 'नयी तालीम': एक सामयिक शिक्षा –दर्शन	डॉ. डी. के. चौ चौधरी	79
2. गांधी की नयी तालीम की प्रासंगिकता	डॉ. अनुशब्द	86
3. अस्पृश्यता का प्रश्न	डॉ. राजीव कुमार सिंह	92
4. संधारणीय विकास का शिक्षण प्रतिरूप	डॉ. झरूप कुमार मिश्र एवं डा. खनीत	99

संधारणीय विकास का शिक्षण प्रतिरूप

डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र[18]
डॉ. रवनीत[19]

संधारणीय विकास और शिक्षा

संधारणीय विकास की चुनौतियाँ जैसे पारिस्थितिकी असंतुलन, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक-सामाजिक असमानता और स्वास्थ्य एवं जीवन की गुणवत्ता में अपेक्षित सुधार का न होना हमारे समय का यथार्थ है। इस यथार्थ का सामना करते हुए हम एक ऐसी दुनिया की कल्पना कर रहे हैं जहाँ जीवन और जगत का सह अस्तित्व हो, हर प्राणी अपने संभाव्य विकास को साकार कर सके, आर्थिक-सामाजिक विषमता न हो, बंधुत्व और सौहार्द मानवीय सभ्यता को सुदृढ़ कर सके। इसके लिए जिन माध्यमों पर विश्वास किया जाता है उनमें शिक्षा सर्वप्रमुख है (यूनेस्को, 2006, यूनेस्को, 2015, एन.सी.एफ. 2005)। संधारणीय विकास के लिए शिक्षा का लक्ष्य है कि कैसे मानव की आधारभूत आवश्यकताओं, उसकी देशज और सांस्कृतिक विरासत, मानवाधिकारों और जैवविविधता का संरक्षण, स्थानीय पारिस्थितिकी और संस्कृति के संरक्षण को शिक्षण से जोड़ा जाए। इस संदर्भ में महात्मा गांधी द्वारा परिकल्पित नयी तालीम एक महत्वपूर्ण पद्धति है। इस लेख में नयी तालीम के सिद्धांत और अभ्यास को ध्यान रखते हुए संधारणीय विकास के लिए शिक्षणशास्त्र के प्रारूप की व्याख्या की गयी है।

गांधी-दृष्टि और संधारणीय विकास

संधारणीय विकास की गांधीवादी दृष्टि प्रकृति और मानव की अविभाज्यता और अखंडता की मान्यता पर आधारित है। गांधी जी की स्थापना थी कि मानव को अपने हर क्रियाकलाप में ध्यान रखना चाहिए कि वह प्रकृति का अंग है न की प्रकृति से भिन्न कोई अलग इकाई। उन्होंने 1909 में लिखित हिंद स्वराज में यह स्पष्ट कर दिया था कि प्रकृति मानव की जरूरतों को पूरा कर सकती है, पर उसके लालच की नहीं। इस स्थापना का खुद उन्होंने जीवनपर्यन्त पालन किया। गांधीजी का मानना था कि औद्योगिक सभ्यता ने संपत्ति संग्रह की प्रवृत्ति को बढ़ाया है। वे विज्ञान-प्रौद्योगिकी एवं नैतिकता में अलगाव को अस्वीकार करते हैं। उनके लिए नैतिकता का स्थान पहले था। प्रायः उन्हें प्रौद्योगिकी का विरोधी माना जाता है, किन्तु वे प्रौद्योगिकी के प्रयोग की 'सनक' के विरोधी थे (गांधी, 1909)। उनका मानना था कि यह 'सनक' ही मनुष्य और प्रकृति के बीच शोषक और शोषित का रिश्ता बना देती है जिसका अंत आर्थिक वर्चस्व के साथ होता है। प्रकारांतर से यह वर्चस्व हिंसा का कारण बनता रहा है (पारिख, 1989)। इन्हीं कारणों से गांधी के लिए गाँव न्यूनतम कृत्रिमता, प्रकृति के साथ सामंजस्य, आत्मनिर्भर एवं सह अस्तित्व वाली भौगोलिक-आर्थिक इकाई थी। इस इकाई को ही वे आदर्श पर्यावास (habitat) मानते थे

---

[18] सहायक प्रोफेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
[19] सहायक प्रोफेसर, माता सुंदरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली